eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में कबीर के विचारों की प्रासंगिकता

[1]दीपक कुमार धर्मवंशी
[1]शोधार्थी, डा0 भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उ0.प्र0

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

महान ऋषियों एवं संतों की भारत की भूमि पर 15वीं शताब्दी में कबीर नाम के एक महान संत का अवतरण हुआ जिन्होनें अपनी साधारण बोलचाल की भाषा में ही समाज को ऐसी राह दिखाई जिस पर चल कर आज भी सुखी व समृद्ध समाज की संकलपना की जा सकती है। कबीर ने अपने दोहों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक सुधारों के लिए तत्कालीन समाज में व्यापत बुराईयों का जमकोर विरोध किया और समाज को अधंविश्वासों से दूर रह कर नैतिकता की सही राह दिखाई जिस पर चल कर मानव अपनी मानवीय जीवन के मूल्य उद्देश्यों की प्राप्ति कर अपने जीवन को सार्थक कर सके।

मूल शब्द – कबीर, रूढ़ियॉ, परम्पराऐं, अंधविश्वास, शिक्षा, चिंतन, मानव, समाज

Introduction

कबीर केवल एक व्यक्ति का नाम या एक व्यक्तिगत पहचान नहीं अपितु एक यात्रा का नाम है जो सैकड़ों वर्ष पूर्व तत्कालीन समय से वर्तमान समय एवं आने वाले भविष्य की पीढ़ी का मार्गदर्शन करते हुए भौतिक अथवा लौकिक जीवन एवं संसार से मानवमात्र प्राणी को अलौकिक एवं परमतत्व की प्राप्ति तक की यात्रा करवाते हैं। मानव को सही रूप में मनुष्यत्व प्राप्त करने का ज्ञान एवं विचार हमें कबीर की वाणी में प्राप्त होते हैं। शिक्षा का सार्थक स्वरूप कबीर के उदृबोधनों एवं दोंहों के बिना अधूरा है। क्योंकि इसके आभाव में शिक्षा अपने उद्देश्यों को पूर्णतः प्राप्त करने में असमर्थ है। इसलिए शिक्षा में कबीर की विचारधारा को समाहित करना अनिवार्य हो जाता है।

कबीर का साहित्य में स्थान– कबीर संतमत के समर्थक एवं संत काव्य के सर्वकालिक महान कवि थे। विलक्षणता के धनी और समाज सुधारक श्री संत कबीर हिन्दी साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनके समकक्ष और कोई क्रांतिकारी कवि हिन्दी साहित्य में दूर–दूर तक दिखाई नहीं देता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्लजी ने कबीर के बारे में कहा है कि वे विलक्षण प्रतिभा और चमत्कारी व्यक्तित्व के धनी थे। कबीर की भाषा पर जबरदस्त पकड़ थी। हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों के इतिास में कबीर जैसा व्यक्तित्व उत्पन्न नहीं हुआ।

कबीर एवं शिक्षा – मूलतः कबीर खुद पढ़े लिखे नहीं थे परन्तु उन्होंने समाज को जो आईना दिखाया वो बड़े से बड़े विद्वानों के लिए कर पाना आसान नहीं था। अपने बारे में कबीर ने खुद ही कहा है कि

मसि कागद छूवो नहीं, कलम गहीं नहिं हाथ

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

आने वाली पीढ़ियों के लिए इस बात पर यकीन करना मुश्किल होगा कि 15वीं शताब्दी का एक साधारण सा जुलाह जिसे अक्षर ज्ञान भी प्राप्त करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ परन्तु अपने क्रान्किारी विचारों से समाज के प्रत्येक व्यक्ति की सोच एवं विचारधारा को पुनर्विचार करने के लिए मजबूर करर दिया कि हम जैसी सोच एवं विचार रखते हैं क्या ये विचार एवं कर्म मानवीय मूल्यों के अनुरूप हैं या नहीं क्या हम अपनी रूढ़िवादि परम्पराओं से आने वाले भविष्य को स्वर्णिम स्वरूप प्रदान कर पायेंगे अथवा नहीं। कबीर के व्यवहारिक एवं मौलिक विचार ही समाज में शिक्षा के मूल स्वरूप की आधारशिला के रूप में प्रतिष्ठापित हुए बिना हम एक खुशहाल मानव समाज और उन्नतशील मानवीय मूल्यों की संकल्पना को स्थापित किया जा सकता है।

कबीर किताबी ज्ञान को ही मात्र शिक्षा का माध्यम या वास्तविक शिक्षा नहीं मानते थे। इसलिए उन्होंने कहा कि

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

कबीर व्यक्ति को आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने वाले माध्यम को ही शिक्षा मानते हैं। जिनमें मानवीय भावनाओं और सवेंदनाओं को समझने एवं त्याग की भावना अंतर्निहित हो।

शिक्षण विधियां – कबीर के विचारों एवं उनकी साहित्य रचनाओं के अवलोकन के फलस्वरूप इस निष्कर्ष पर पहुँचा जो सकता है कि अनके द्वारा शिक्षा प्राप्त करने एवं प्रदान करने की चार मुख्य विधियां हैं।

1– चिन्तन अथवा विचार–विमर्श
2– अनुभव द्वारा ज्ञानार्जन
3– सत्संगति
4– सिद्धांतों के अनुसार जीवन–यापन

अगर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाए तो यह समग्र शिक्षा प्राप्त करने का मार्ग अथवा माध्यम है। जिसमें बालकों की चिन्तन शक्ति, आध्यात्मिकता एवं भावात्मकता और बौद्धिकता का विकास संभव हो सकेगा।

गुरू शिष्य संबंध – कबीर के साहित्य में हमें गुरू शिष्य परंम्परा का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है जिसके द्वारा प्रतीत होता है कि मनुष्य के जीवन में गुरू का एक विशेष महत्व है जिनके मार्गदर्शन के बिना मानव अपने जीवन लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकता है। इसलिए कबीर ने कहा है कि

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।।

गुरू महिमा वर्णन करते हुए कबीर ने यहाँ तक कहा है कि

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

सब धरती कागज करूँ, लिखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरू गुण लिखा न जाय।।

आध्यात्मिक अनुभूति – कबीर के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। उनके अनुसार शिक्षा–दृष्टि में अन्तकरण से साक्षात्कार कररने वाली आध्यात्मिक अनुभूति को शिक्षा कहा गया है। मानव अपने जीवन के इस पक्ष की अवेहलना नहीं कर सकता । मानव के सुख रूपी संसार की चाबी उसके हाथ में ही है यदि मानव अपने अंदर आत्म – संतुष्टि का भाव जागृत कर आवश्यकताओं को सीमित करने की क्षमता अपने अंदर विकसित करने में सफल हो जाता है तो वह खुद को सुखी व समृद्वशाली होने का अहसास करेगा। ये गुण केवल आध्यत्मिकता से प्राप्त हो सकता है।

निष्कर्ष– संत कबीर के विचारों को सागर्भित रूप में देखा जाए तो वे विद्यार्थियों में रूढ़िवादिता, असत्यता, अनैतिकता एवं नकारात्मक प्रवृत्तियों का उन्मूलन हेतु सत्य निष्ठा, परोपकारिता, स्वच्छता, शारीरिक श्रम, समाज–सेवा आत्मनिर्भरता जैसे सदृगुणों का समावेश करने एवं संयमित और अनुशासित जीवन शैली को अपनाने पर जोर देते हैं। जिससे भावी नागरिक शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से सक्षम व समृद्वशाली बन सकें। जो ऐसे समाज का निर्माण कर सकें जहाँ रूढ़िवादिता एवं बाहय आड़म्बरों और अंधविश्वासों का कोई स्थान न हो । समाज सुखी व खुशहाल हो, प्रत्येक मनुष्य का हदृय पवित्र एवं एक दूसरे के लिए प्रेम की भावना से ओत–प्रोत हो।
सही मायने में उचित उद्देश्यों के साथ सही शिक्षा माध्यम से हम अपनी शिक्षा व्यवस्था को संचालित करते हैं तो एक दिन अवश्य ही हमारा महान भारत विश्व गुरू का दर्जा पुनः प्राप्त कर सकेगा।

सन्दर्भ सूची –
1. माचवे प्रभाकर 'कबीर' साहित्य अकादमी नई दिल्ली।
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीः कबीर–वाणी, राजकमल प्रकाशन 1980
3. कबीर ग्रन्थावली, श्यामसुन्दरदास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

Internet Source – https://epustakalay.com
https://sufinama.org
http://m.bharatdiscovery.org
http://rashrtiyashiksha.com